Available online at http://www.nrjp.co.in

Journal of Management Science, Operations & Strategies
Vol. 4, Issue, 03. 31-38p, Dec, 2020

National Research & Journal Publication

Review Article

बाकीनगर, रहीमाबादः (लखनऊ जनपद) के दो गांवों में परिवर्तन और निरन्तरता का एक अध्ययन

सहेर हुसैन
शोधार्थिनी, श्री विन्केटश्वर विश्वविद्यालय
रिसर्च गाइड : **डॉ0 करण सिंह चौहान**

सारांश

भारत देश एक विशाल जनसंख्या वाला देश है, हमारे देश का एक बड़ा भू–भाग गांवों में निवास करता है। गांवों के अधिकतर लोग आज भी अपनी आजीविका के लिए काफी हद तक कृषि पर निर्भर है। भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ग्रामीण भारत की तस्वीर निरन्तर बदल रही है। गांवों में बुनियादी सुविधाओं का विकास हुआ है विशेष रूप से बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य आदि। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का विस्तार भी इस परिवर्तन में विशेष भूमिका निभा रहा है। सरकार समय–समय पर ग्रामीणो के लिए योजनाएं संचालित करती है किन्तु जरूरत इस बात की है कि योजनाओं का क्रियान्वयन सही ढंग से हो। ग्रामीण समुदाय में परिवर्तन के कारको का अध्ययन कल्याण कार्यों के विकास में अन्तर्दृश्टि प्रदान करता है।

मुख्यशब्दः *आजीविका, प्रौद्योगिकी, योजनाएं, परिवार, ग्रामीण नियोजन।*

Copyright©2020, सहेर हुसैन, डॉ0 करण सिंह चौहान *This is an open access article for the issue release and distributed under the NRJP Journals License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*

प्रस्तावना –

भारतीय ग्रामीण समाज के अधिकतर लोगो की आजीविका कृषि अथवा कृषि आधारित होने के साथ–साथ सीजनल माइग्रेशन पर निर्भर करती है। नगरों में जाकर यह ग्रामीण प्रवासी अपनी आय के साथ–साथ आधुनिक विचारों को भी अपनाते है। जीवन के विभिन्न पक्षों में आधुनिक तकनीकी, तर्कसंगत विचारो के प्रचार एवं नगरो के साथ

ग्रामीण समाज में भी शिक्षा, नवीन उद्यमों, जीवन प्रत्याशा, स्वास्थ्य एवं लोकतांत्रिक मूल्यों में वृद्धि हुई है। वर्तमान अध्ययन गांवों के जीवन का गठन करने वाले महत्वपूर्ण घटकों को समझने की कोशिष है। इसमें लोगों के व्यवहार परीक्षण और कार्यक्रम कार्यान्वयन के आधारभूत तथ्यों का विभिन्न सामाजिक समूहों, सामाजिक संरचना, जाति, परिवार, नातेदारी आदि का अध्ययन किया गया है। अर्थव्यवस्था, निर्णय लेने के विकल्प तथा राजनीति का विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक अंतःक्रियाओं को नियंत्रित करने वाले तत्वों का विश्लेषण भी किया गया है। यह अध्ययन ग्रामीण समाज का नगरीय क्षेत्रों पर निर्भता दिखाता है इसमें ग्रामीण समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक पक्षों का समग्र प्रस्तुतीकरण है। यहां की मिट्टी की खुशबू फलों के राजा आम के माध्यम से देश और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में पहुंचती

रहती है। लखनऊ की गंगा जमुनी तहजीब पूरे विश्व में जाना जाती है क्योंकि इसमें अनेक संस्कृतियों का समावेश है। मुगल शासकों के साथ अंग्रेजी हुकूमत को भी यह शहर हमेशा ही पसन्द रहा। यहां सामाजिक समरसता एवं भाईचारे के साथ सामाजिक परिवर्तन एवं निरंतरता के अंश साथ–साथ चलते हैं।

ग्रामीण समाज में निरंतरता और परिवर्तन पर आधारित यह अध्ययन लखनऊ जनपद की मलिहाबाद तहसील में स्थित जिंदौर ग्राम पंचायत के दो गांवो बाकीनगर और रहीमाबाद में विकास और सामाजिक परिवर्तन की विभिन्न प्रक्रियाओं को प्रस्तुत करेगा। यह दोनो गांव लखनऊ हरदोई राज्य मार्ग पर लखनऊ जिला मुख्यालय से लगभग 45 किमी दूर स्थित है। यह शोध कार्य रहीमाबाद और बाकीनगर गांवों का अध्ययन एक मायने में अद्वितीय है क्योंकि इन दोनों ग्रामों या ग्राम पंचायत जिंदौर में से कोई भी गांव कभी भी इस प्रकार के समाजशास्त्रीय विश्लेषण में शामिल नहीं रहा है, जिसमें सैद्धान्तिक रूप से निरंतरता और परिवर्तन का अध्ययन किया गया हो। दोनो ग्रामीण समुदायों की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि लगभग समान है, इसलिए यह ध्यान में रखते हुए अध्ययन किया गया है कि अध्ययन तथ्यों में विशमता की संभावना कम हो।

उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन सामाजिक संरचना में परिवर्तनों के निर्धारक कारकों का अध्ययन करने का प्रयास करेगा, जो गांवों के जीवन में आर्थिक विकास व जीवन स्तर की गुणवत्ता में सुधार, शिक्षा, संचार और अन्य परस्पर सम्बन्धित पहलुओं की प्रक्रियाओं पर प्रकाश डालेगा। इस अध्ययन के निम्न उप– उद्देश्य है।

1. गांव की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों को समझना एवं परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
2. गांव की सांस्कृतिक व राजनीतिक परिस्थितियों को समझना एवं परिवर्तन का विश्लेषण करना।
3. गांव में लैंगिक समानता का विश्लेषण करना।

अध्ययन पद्धति –

इस अध्ययन में अन्वेशणात्मक अनुसंधान अभिकल्प का उपयोग किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनो स्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक दत्त संकलन के लिए मात्रात्मक तथा गुणात्मक दोनो विधियों को अपनाया गया है। मात्रात्मक तथ्य जनसंख्या, शिक्षा, निर्णय के विकल्प आदि पर एकत्र किये गये थे जबकि गुणात्मक तथ्य मानव व्यवहार, आदतों, पहनावा, स्वास्थ्य राजनीतिक हित आदि पर संकलित किये गये थे। गहन साक्षात्कार, केन्द्रित समूह चर्चा हेतु अनौपचारिक बैठके आयोजित की गई, जिसमें समाज वैज्ञानिक नियमों यथा–गोपनीयता आदि का पालन किया गया। दत्त संग्रह के विभिन्न तरीकों के माध्यम में ग्रामीण जीवन में सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व संचार के प्रभाव की वास्तविकता को समझने का प्रयास किया गया।

इसमें गांवों का सम्पूर्ण अध्ययन करने का प्रयास किया है। ग्रामीणों के बीच मात्रात्मक जानकारी इकट्ठा करने के लिए तीन सौ साक्षात्कार अनुसूचियों को भरा गया।

साक्षात्कार अनुसूची में पांच पहलुओं (1) व्यक्तिगत जानकारी (प्रोफाइल) (2) सामाजिक संगठन (3) आर्थिक संगठन (4) राजनीतिक संगठन आदि शामिल किये गये थे।

विश्व प्रसिद्ध सामाजिक मानवशास्त्री **मैकिम मेरिअट (1955)** ने अपनी पुस्तक **विलेज इण्डिया** में अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) के ग्रामों का अध्ययन प्रस्तुत किया था। जो भारत के ग्रामों का अन्य समुदायों एवं सभ्यताओं के साथ अन्तःसम्बन्ध को दर्शाता है, किन्तु यह सम्पूर्ण भारतीय ग्रामो का प्रतिनिधित्व नहीं करता।

एडवर्ड सिम्पसन (2016) ने ओडिशा, मध्य प्रदेश एवं गुजरात के ऐसे गांवों का पुनः अध्ययन किया जो 1950 के दशक में ब्रिटिश मानव विज्ञानी एफ0जी0 बेली (विशीबारा), एड्रियन सी मेयर (जमगोड) और डेविड एफ, पोकॉक (सुन्दराना) द्वारा अध्ययन किये जा चुके थे। जिसमें 1950 के सामाजिक जीवन की स्थितियों के आंकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया।

इसमें ब्रिटिश उपनिवेश से आजाद भारतीय गांवों में हुए सामाजिक आर्थिक बदलावों का परीक्षण किया गया है। उपनिवेशवादी प्रशासन द्वारा भारतीय ग्रामों का एक (ग्राम गणराज्य) के रूप में सुन्दर विवरण किया था जिसने अमेरिका एवं ब्रिटिश सामाजिक मानवविज्ञानियों को भारत के ग्रामो का क्षेत्रीय अध्ययन करने हेतु आकर्शित किया।

टोमासो साब्रिकोली (2016) ने मध्य प्रदेश में स्थित देवास जनपद के जमगोड़ गांव, जिसका अध्ययन 1950 के दशक में ए0सी0 मेयर ने किया था का सन 2012–14 में दोबारा अध्ययन किया। उन्होंने **''भूमि, श्रम और शक्ति''** पर लेख के माध्यम से गांवों में भूस्वामित्व एवं उसके उपयोग में बदलाव तथा उत्पादन एवं श्रम के सम्बन्धों का अवलोकन प्रस्तुत किया है। यह अध्ययन स्थानीय भाक्ति संरचना एवं व्यक्गित आकांक्षाओं में हो रहे बदलावों को दर्शाता है।

लन्दन स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स एण्ड पॉलिटिकल साइंस के शोधकर्ताओ ने उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के पालनपुर गांव जो कि 1950 के दशक से ही समाज वैज्ञानिकों द्वारा गरीबी एवं परिवर्तन के अध्ययन के लिए केन्द्र रहा है। इसमें पिछले सत्तर सालों में हुए बदलावों एवं विकास के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया।

अध्ययन दल ने जमींदारी उन्मूलन, हरित क्रांति, शिक्षा, सामाजिक वं जनांकिकीय संरचना में बदलाव, संचार में परिवर्तन आदि पर आंकड़े एकत्र किये थे। यह अध्ययन 1957/8 से लगातार भारत के विकास को एक गांव के अनुभव से समझने का प्रयास है, जिसमें 100 प्रतिशत घरों को सर्वेक्षण किया जाता रहा है।

शोध परिणाम

महिला परिवार के साथ लंच और डिनर करती है।

तालिका –1 महिला और पुरूष साथ में लंच और डिनर करते है

	संख्या	प्रतिशत
हां	166	55.34
नां	134	44.66
योग	300	100

स्रोत – शोधकर्ता द्वारा क्षेत्रीय सर्वेक्षण

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से भारतीय समाज में लैंगिक असमानता दिखाई देती है, लेकिन साथ ही विभिन्न नियमों एवं परियोजनाओं के प्रभावस्वरूप सामाजिक गतिशीलता एवं लैंगिक समानता भी प्रकट होने लगी है। महिला सशक्तिकरण के रास्ते में जो बाधाएं है वह घर, समुदाय, बाजार और राज्य के स्तर पर लैंगिक विशमता के रूप में दिखती है।

परिवार में निर्णायक भूमिका

भारत में सरकारों ने कानूनो और नीतिगत हस्तक्षेपों के माध्यम से लिंगभेद को कम करने का प्रयास किया है। भारतीय समाज में विवाह एक महत्वपूर्ण संस्था है। जीवन साथी का चुनाव एक महत्वपूर्ण निर्णय है, जो सामान्यतः एक व्यक्ति के माता–पिता, परिवार एवं रिश्तेदारों द्वारा किया जाता है। विवाह पति एवं पत्नी के बीच सामाजिक–सांस्कृतिक मान्यता प्राप्त संघ है, जो उनके तथा उनसे जन्में बच्चों के अधिकारों और दायित्वों को स्थापित करता है। विवाह दो परिवारों का मिलन है, जिसमें भावनात्मक रूप से स्थिर और परिपक्व माता–पिता अपने बच्चों को साझा मूल्यों के साथ पालन–पोशण करते हैं। आज भी विवाह हेतु परिवार द्वारा लिए गए निर्णय को सबसे अच्छा माना जाता है, लेकिन बदलाव को देखा जा सकता है, क्योंकि आजकल लड़की या लड़के की राय को भी ध्यान में रखा जाता है।

शिक्षा समाज में समरसता, समानता एवं लोकतांत्रिक मूल्य स्थापित करने का मार्ग है। शिक्षा का निर्णय परिवार के बुजुर्ग/वरिष्ठ सदस्य सदस्यों के परामर्श से लिया जाता है, जिसमें जीवन का अनुभव होता है। संयुक्त परिवारों में कभी–कभी ताऊ, दादा भी उच्च अध्ययन के लिए अंतिम निर्णय का हिस्सा होते है। शिक्षा सम्बन्धी अधिकतर मामलों में पिता ही अंतिम निर्णय लेता है और कुछ मामलों में माताओं से भी सलाह ली जाती है। युवा दिमाग वर्तमान रूझानों और समाज की मांगों के बारे में जानते है। वह विभिन्न सूचनाओं के लिए इंटरनेट का उपयोग करते है और अपडेट रहते है। आज समाज में गतिशीलता एवं जागरूकता के परिणामस्वरूप लगभग एक–तिहाई परिवारों में विद्यार्थी स्वयं निणय लेते हैं।

तालिका–2 व्यवसायिक शिक्षा

लिंग	संख्या	प्रतिशत
लड़के	188	62.66
लड़कियां	112	37.34
कुल	300	100

आरम्भ से लोग लड़कियों की व्यवसायिक शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं थे किन्तु उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि समाज में विभिन्न परिवर्तन की प्रक्रियाओं के प्रभाव से कुल में से 37.34 प्रतिशत लड़कियां व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कर रही है जबकि कुल में से 62.66 प्रतिशत लड़के व्यवसायिक ज्ञान प्राप्त कर रहे है।

प्रौद्योगिकी का उपयोग – संचार के माध्यम के रूप में आज गांवों में यह संभव है कि लोगो के पास अन्य बुनियादी आवश्यकताएं भला पूरी न होती हो, लेकिन वह मोबाइल फोन का उपयोग करते हैं। आज सभी जगह मोबाइल कनेक्टिविटी है, परिणामस्वरूप 34.00 प्रतिशत परिवारों के पास एक मोबाइल फोन 51.33 प्रतिशत परिवारों के पास दो मोबाइल फोन तथा 14.67 प्रतिशत परिवारों के पास दो से अधिक मोबाइल है (तालिका–3(क)। मोबाइल कनेक्टीविटी ने दुनिया से सीधा सम्पर्क बढ़ाया है। एक से अधिक मोबाइल फोन रखने वाले परिवार अपनी बढ़ती हुई सामर्थ्य और गोपनीयता की भावना को दर्शाते है।

(तालिका–3(ख) में दिखाया गया है कि 71.34 प्रतिशत परिवारों के पास स्मार्ट फोन उपलब्ध है, जबकि 28.66 प्रतिशत के पास की–पैड वाला फोन हैं। अधिकतर युवा अपनी पढ़ाई, नौकरी या व्यवसाय को सुविधाजनक बनाने के लिए स्मार्टफोन का उपयोग करते हैं। ग्रामीणों में गतिशीलता बढ़ी है, जो महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र है वह स्मार्टफोन रखने का भौक रखती है। उनका मानना है कि इसने काम को आसान बनाने के साथ रिश्तेदारों से जोड़े रखने में मदद की है। ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा अपने मिशन अंत्योदय के हिस्से के रूप में किए गए एक हालिया सर्वेक्षण के निष्कर्षों से पता चलता है कि 17 राज्यों और केन्द्र भाासित प्रदेशों में राष्ट्रीय औसत से अधिक मोबाइल कनेक्टीविटी वाले गांव है।

तालिका–3 परिवार में उपलब्ध मोबाइल फोन–संख्या, स्वरूप व उपयोग

विवरण	संख्या	प्रतिशत
क. मोबाइल फोन की संख्या		
एक	102	34.00
दो	154	51.33
दो से अधिक	44	14.67
ख. स्मार्ट फोन का पैशन		
स्मार्ट फोन	214	71.34
की पैड	86	28.66
ग. मोबाइल फोन उपयोग का उद्देश्य		
केवल वार्तालाप	78	26.00
वार्तालाप एवं संदेश भेजना	44	14.67
वार्तालाप, संदेश एवं अन्य	178	59.33
उपयोग		
योग	300	100

स्रोत : शोधकर्ता द्वारा क्षेत्रीय सर्वेक्षण

मोबाइल फोन की उपयोगिता में विविधता आयी है। तालिका–3(ग) के अनुसार 26 प्रतिशत परिवार मोबाइल फोन का उपयोग वार्तालाप हेतु जबकि 14.67 प्रतिशत परिवार वार्तालाप और संदेश दोनों के लिए करते हैं। अधिकांश परिवार (59.33 प्रतिशत) वार्तालाप, संदेश और अन्य एप्लिकेशन श्रेणी (जिसमें शिक्षा सामाजिक नेटवर्किंग गेम, वीडियो, संगीत आदि शामिल है) के लिए मोबाइल फोन का प्रयोग करते है। जहां एक ओर वृद्ध और अशिक्षित लोग मोबाइल फोन का इस्तेमाल केवल बातचीत के लिए करते है, तो दूसरी ओर छोटे बच्चे व महिलाएं अपने खाली समय में गेम खेलती है, गाने सुनती है और मूवी देखते हैं। गांव में एक व्यक्ति जिसके पास कोई टेलीविजन नहीं है अपने हैंडसेट पर वीडियो और फिल्में देखता है।

परिवार में शिक्षा का प्राविधान :

भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा न केवल गरीबी और अशिक्षा को दूर करने के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि अनेक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों में भी सहायक है। सर्वशिक्षा अभियान सहित कई सरकारी योजनाओं के चलते कोई भी ऐसे परिवार नहीं है जो अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेज रहे है। स्कूल जाने वाले इन दोनो गांवों के 98.33 प्रतिशत परिवार हैं, जिनमें से बालिकाएं भी निजी या सरकारी विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रही है। जबकि लगभग 2 प्रतिशत

परिवारों की बालिकाएं अपनी व्यक्गित समस्याओं यथा–स्वास्थ्य, विकलांगता जैसे कारणों से स्कूल नहीं जा पाती है अथवा उनके पास कोई अभिभावक नहीं है।

महिलाओं द्वारा आर्थिक अर्जन में सहयोग – आजकल महिलाएं पुरूशों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। तालिका–4 में दिखाया गया है कि 77.34 प्रतिशत परिवारों में महिलाओं द्वारा पारिवारिक आय में योगदान किया जाता है, जबकि केवल 22.66 प्रतिशत परिवारों में महिलाओं का आय में कोई योगदान नहीं है। क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान पाया गया कि गरीब परिवारों की महिलाओं ने पारिवारिक आय में योगदान दिया है। खासतौर पर जब परिवार में विवाह अथवा पुरूश सदस्य के स्वास्थ्य का मुद्दा होता है, तो महिलाएं कमाने की हर कोशिष करती है। आजकल ग्रामीण महिलाएं प्राथमिक स्कूल में शिक्षक, सरकारी अस्पताल, निजी क्लीनिकों में सहायक/नर्स का काम करती है। निजी दुकानों पर पुरूशों के न होने पर दुकानों का संचालन करती हैं। निम्न जाति की महिलाओं ने पारम्परिक और अकुशल काम किया जबकि उच्च जाति की महिलाओं ने अधिकतर अध्यापन, चिकनकारी, जरदोजी, पार्लर, कम्प्यूटर सेंटर में काम करती है। सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप इस बात की जरूरत सामने आती है कि समाज के सभी व्यक्तियों को ज्ञान और क्रियात्मकता का लाभ प्राप्त हो। आधुनिक समाज में जनसंख्या और सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में जो नवीन प्रवृत्तियां दृश्टिगोचर हो रही है उसके अनुसार परिवार और समाज में नारी की भूमिका को पुनः परिभाशित करने की जरूरत है। परिवार का आकार, जीवन स्तर की उच्चता, विवाह, आयु, नगरीकरण की प्रक्रिया में अपेक्षाकृत अधिक सहभागिता आदि यह परिवर्तन के ऐसे क्षेत्र है जो महिलाओं की भूमिका और जिम्मेदारी में परिवर्तन की अपेक्षा करते है। सामाजिक व्यवस्था में सुधार और संतुलन बनाए रखने के लिए महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन जरूरी है।

तालिका–4 परिवार में महिलाओं द्वारा आर्थिक अर्जन में सहयोग

महिलाओं द्वारा आर्थिक अर्जन में सहयोग	संख्या	प्रतिशत
सहयोग किया जाता है	232	77.34
सहयोग नहीं किया जाता है	68	22.66
योग	300	100

निष्कर्ष – गांवों में विकास के बावजूद काफी हद तक गांवों अपना स्वरूप संजोये हुए है। किन्तु यह कहना भी गलत नहीं होगा कि ग्रामीण समाज बहुत हद तक नगर से प्रभावित है और गांवों में भी अनेक सुविधाओं का उपभोग किया जा रहा है। शिक्षा के प्रचार और प्रसार ने गांव में सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा दिया है। महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त एवं शिक्षित होने के कारण पारिवारिक जीवन के निर्णयों में बराबर से शामिल है। संचार के साधनो का प्रसार और आधुनिक तकनीक के प्रयोग से ग्रामीण सामाजिक संरचना में मूलभूत परिवर्तन हुए है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. Simpson, Edward and Jeffery, Patrica et al (2018) RURAL CHANGE AND ANTHROPOLOGICAL KNOWLEDGE IN POST-COLONIAL INDIA : A COMPARATIVE 'RESTUDY'OF F.G. BAILE, ADRIAN C. MAYERAD DAVID POCOCK 1950-2012; Colchester, Essex : UK Data Archieve. 10.5255/ukda-sn-852771
2. Sbirccoli, Tommaso (2016) Land, Labour and Power, Economic and Political Weekly, Vol. 51, Issue No. 6-27.
3. Marriot Mekim (1955) Village India : Studies in the Little Community Chicago The University of Chicago Press.
4. Simpson, Edward (2016) Village Restudies: Trials and Tribulations Economic and Political Weekly, Vol. 51, Issue No. 26-27.
5. Himanshu and Stern, Nicholas (2011) India and an Indian village: 50 years of economic development in Palanpur, Rep ort to Department for International Development, London School of Economics and Political Science. https: //sticerd. lse. ac. uk /india/research /palanpur/ default.asp.
6. Bailey, FG (1958/1964) Caste and Economic Frontier: A Highland Orissa Village, Bombay: Oxford University Press (Indian Branch).
7. Wade, Robert (1988/1994) Village Republics: Economic Conditions for Collective Action in South India, California, International Centrefor Self-Governance.